जिओटैक के आधार पर भारतीय परम्पराओ एवं रीति रिवाजो का संरक्षण एवं संवर्धन के आयामो का विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन राजस्थान का विशेष सन्दर्भ में

भूगोल से पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक
डॉ. धीर सिंह

शोधार्थी
प्रहलाद कुमावत
JVR-II/20/4013

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान 2021

1. परिचय **(Introduction)**

- भारत देश मे प्राचीन काल से विभिन्न धर्मो के लोग रहते है। जो अलग–अलग रीति रिवाजो के कारण अपने अपने समाज मे स्वतन्त्र थे तथा जिसमे स्त्री पुरूषो मे अलग–अलग पहनांवा व वेशभूषा पहनते थे व खान पान ऊठ बैठ चाल चलन हर समाज मे अलग–अलग रीति रिवाज रहें है तथा अलग–अलग धर्मो के लोग निवास करते है ।
- स्त्रीयो के पहनावे अलग–अलग जाति मे अलग–अलग वेशभुषा पहनते थे। जिससे जाति विशेष की पहचान हो पाती थी व पुरूषां मे भी अलग–अलग जाति के पुरूष अलग–अलग तरह की वेशभुषा पहनते थे, जैसे बुगतरी, धोति, साफा आदि हर जाति विशेष मे अलग–अलग मनोरंजन के तरीके थे।
- आधुनिक भारत के राज्यो मे सभी जातियो के समाजो मे रीति रिवाजो मे परिवर्तन होने लगा है, कई जातियों मे तो प्राचीन काल की वेशभूषा समाप्त ही हो गयी है, जैसे ब्राह्मण जाति की महिलाये साडी का वेश पहनती थी, जो कि आज सूट व अन्य कपडे पहनने लग गई है वैसे ही मीणा जाति की महिलाये लहंगा, ब्लाउज और ओढनो आदि वस्त्र पहनते थे जो आज इनकी जगह साडी व सूट का

प्रयोग करने लग गय है। इसलिए जो रीति रिवाज समाप्ति की ओर है, उनको जिओटैग के माध्यम से मिडिया के द्वारा प्राचीन परम्परागत रीति रिवाज व संस्कृति को पुनः अपनाया जाये। ताकि भविष्य मे प्राचीन रीति रिवाजो को पहचान सके लेकिन मीडिया वाले रीति रिवाज के सम्बन्ध मे किसी भी प्रकार की रूचि नही रखते हैं, कि यह वर्तमान मे कैसे कैसे कपडे पहनते है ।

- भविष्य मे भारत देश के राज्यो के परम्परागत रीति रिवाज समाप्त होने के कगार पर है, आने वाले समय मे स्त्री व पुरूषो की वेशभूषा एक समान हो जायेगी। भविष्य मे भारत के परम्परागत रीति रिवाज समाप्त होने के कगार पर है, आने वाले समय मे स्त्री व पुरूषा की वेश भूषा एक समान हो जायेगी, जिससे स्त्रीयो को पहचानना मुश्किल हो जायेगा आज मीडिया वालो ने इन रीति रिवाजो मे सबसे ज्यादा स्त्रीयों के पहनावा मे अन्तर आ रहा है। जिससे परम्परागत रीति रिवाज समाप्त होते जा रहे है, ओर सभी जाति के पुरूषा मे धीरे–धीरे धोति, कमीज व साफा पहनना अहुत कम कर दिया जिससे भविष्य मे इस वेसभूषा की पहचान नही रहेगी। और यह वेशभूषा म्यूजियमो मे देखने के लिए मिलेगी। अगर वर्तमान मे भी देखे तो 80 प्रतिशत

स्त्री व पुरूषो मे देखने के लिए मिल रहा है, जिसमे आधुनिक युग की लडकियों ने काफी परिवतन कर दिया है, लडकियाँ पेंट पहनने लग गयी है, और इस से धोरे–धोरे स्त्रीयों के वेशभूषा का रोति रिवाज समाप्त होता जा रहा है, आज के समय मे त्याहार व शादी समारोह मे भी काफी परिवर्तन हो गया है, जिससे खर्चा ज्यादा होने लग गया है।

- प्राचिन काल में लमे त्याहार बडे धूम धाम से मनाते थे, जो वर्तमान मे त्योहार जैसा लगता ही नहीं है, जैसे दीपावली के त्योहार पर काफी दिनो पहले कच्चे मकानो को सजाने लग जाते थे, कहीं स मिट्टी लाकर घरा की पुताई करना आदि कार्य किये जाते थे।
- भारत देश के सभी राज्यो मे अलग–अलग धर्मो के लोग रहते थे, व रह रहे ह। सभी जाति धर्मो मे अलग–अलग रोति रिवाज होते थे व आज भी अलग–अलग है। लेकिन प्राचीन व आधुंनिक रोति रिवाजो म बहुत अन्तर हो गया है,
- राजस्थान – राजस्थान की जन्मभूमि के लिए प्राण न्योछावर कर देने वाले वीरा तथा वीरागंनाओ की भूमि राजस्थान भारत के उत्तर – पश्चिम मे स्थित है, तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बडा राज्य है। इसका क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलो, है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का

10.41 प्रतिशत है। राजस्थान के पूर्व मे गंगा, यमुना नदियो के वृहद मैदान, दक्षिण मे मालवा के पठार तथा पश्चिम मे पाकिस्तान से घिरा हुआ है। राजस्थान का भौतिक स्वरूप अत्यधिक जटिल एवं विविधतापूर्ण है। जहाँ एक और विशाल मरूभूमि है, तो वहीं दूसरी और पहाडी एवं मैदानी भाग है। इस भू– भाग का भौतिक स्वरूप, भूगर्भिक इतिहास मे होने वाली आंतरिक शक्तियों तथा जलवायु से नियंत्रित बाह्य शक्तियो के सम्मिलित प्रभाव से उन क्रियाओं का परिणाम है,

- राजस्थान की स्थिति :– राजस्थान प्रदेश 23˙ 3′ उत्तर अक्षांश से 30˙ 12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69˙ 30′ पूर्वी देशान्तर से 78˙ 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है, राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर मे स्थित हैं। कर्क रेखा राज्य मे डूँगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा से होती हुई बांसवाडा जिले के लगभग मध्य मे से गुजरती है। बांसवाडा शहर कर्क रेखा से राज्य का सर्वाधिक नजदीक स्थित शहर है। कर्क रेखा के उत्तर मे होने के कारण जलवायु की दृष्टि से राज्य का अधिकांश भाग उपोष्ण या शीतोष्ण कटिबन्ध मे स्थित है।

- विस्तार– उत्तर से दक्षिण तक राज्य की लम्बाई 826 किमी. व विस्तार उत्तर मे कोणा गाँव (गंगानगर 30̇ 12′ उत्तरी अक्षांश पर) से दक्षिण मे बोरकुंड गाँव (कुशलगढ, बाँसवाडा 23̇ 3′ उत्तरी अक्षांश पर) तक है। पूर्व से पश्चिम तक राज्य की चौडाई 869 किमी. तथा विस्तार पश्चिम मे कटरा गाँव (सम जैसलमेर 78̇ 17′ पूर्वी देशान्तर पर) से पूर्व मे सिलावट गाँव (राजाखेडा धौलपुर 69̇ 30′ पूर्वी देशान्तर) तक है। आकृति विषमकोणीय चतुर्भुज या पतंग के समान। स्थलीय सीमा 5920 किमी. है।
- राजस्थान मे रोति रिवाज प्राचोन काल से हो चले आ रहे है, जो बहुत प्रसिद्ध है। जो कि प्राचीन धराहर मे द्ु्र्ग,वन्यजोव अभ्यारण प्रसिद्ध धार्मिक स्थल तथा कुऐं बावडियों है, जो आज जीण शोण हो रही है। इनका कोई संरक्षण नहीं है, इसमे इन एतिहासिक धरोहरो की स्थिति खराब होने के कारण इनके लिए जिओटैग के द्वारा निरीक्षण करके फोटो खेच कर मिडिया या सरकार को देकर इसका जोर्णोद्धार किया जा सकता है। आज की स्थिति मे जो प्राचोन दुर्ग जो है। इनकी स्थिति बहुत खराब है। इन दुर्गो मे कई प्रकार के महल है। जो आज धोरे–धोरे समाप्ति की और है। इनकी देख–रेख करके इसको

नोरोक्षण कर जिओटैग कर इसको प्रसिद्ध बनाया जा सकता है, ऐसे ही वन्यजीव अभ्यारणो की स्थिति है, जिससे कई प्रकार के जीवो की मृत्यु हो रही है। जिसस प्राचीन जीव जन्तु देखने के लिए नही बचे है। इनका भी जिओटैग के माध्यम से इनको बचाया जा सकता है। जैसे हरिण, सियार, चोता, लोमडी ल्याळी, गोदड, आदि जानवर समाप्ति की ओर है। इनके लिए जगंलो को बचा कर इनकी सुरक्षा जिओटैग के माध्यम से की जा सकता है।

- ऐसे ही प्राचीन कुऐं बावडियाँ, इन की भी आज बहुत दुर दशा हो रही है, इन के लिए भी जिओटैग कर के इनका जीर्णोद्धार करवाया जा सकता है।

- राजस्थान मे रोति रिवाज प्राचीन काल से ही चले आ रहे है। जो बहुत प्रसिद्ध है, जो अलग–अलग जाति विशेष मे रहन–सहन खान–पान वेश भुषा अलग–अलग तरह के पहनते थे जैसे पश्चिमी राजस्थान मे अलग पहनावा है। राजपूत पहनावा मीणा जाति के लोगो के पहनावा अलग है। ब्राह्मण जाति के लोगो का पहनावा अलग हैं। इस प्रकार हर जाति वर्ग मे विवाह शादी व कई प्रकार के उत्सव अलग–अलग तरोके से किया जाता है। जिसमे शादी विवाह

मे वर व वधु के पहनावे तथा उनके परिवार के सदस्यो का पहनावा अलग–अलग होता है।

- राजस्थान के आधुनिक समय मे इन रोति रिवाजो मे बहुत परोवर्तन हो गया है, जो इस प्रकार है। जैसे ब्राह्मण जाति,बनिया जाति, मीणा जाति, जाट जाति, कुम्भकार जाति रैगर जाति आदि जातियों मे वेश भूषा एक समान हो गई है। तथा खान–पान मे बहुत परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसलिए जिओटैग के द्वारा मिडिया से अवगत करा कर इन रोति रिवाजो को समाप्त होने से बचा सके और भविष्य मे राजस्थान के परम्परागत रोति रिवाज पूरी तरह से समाप्त हो जायेगा प्राचीन वेश भूषा का नाम तक नहीं जानते है।

2. साहित्य पुनरावलोकनः–

साहित्य पुरावलोकन मे पुनरावलोकन शब्द दो शब्दो से मिल कर बना है, पुनः और साहित्य अवलोकन का अर्थ है जांच पडताल करना।

साहित्य पुनरावलोकन के अंतर्गत हम अपने शोध विषय से संबंधित पहले से मौजूद किसी साहित्य या शोध पत्रिका का अध्ययन करते है। इसके अंतर्गत हम इस बात का अध्ययन करते है, कि हमारे द्वारा चुने गए क्षेत्र मे परम्परागत रोति रिवाजों मे कितना परिवर्तन हो चुका है, तथा परम्परागत साहित्य के द्वारा जो साहित्य लेखको के द्वारा इन रोति रिवाजो का जानने की कोशिश करेगे।

- प्रस्तावित अध्ययन के संदर्भ में पूर्ववर्ती अध्ययनों का मूल्यांकन (Review and Literature)

यद्यपि राजस्थान के अनेक क्षेत्रो पर परम्परागत रीति रिवाजों एवं उनके उपयोग व अन्य महत्वपूर्ण पर बहुत से विद्वानों द्वारा चटर्जी 1953, दयाल 1950, सफी 1950, अग्रवाल 1972, बनर्जी समिति 1980, भाटिया 1967, बैलेन्टी 1978 एवं पीटर्स व लारकिन्स 1979 आदि द्वारा किए गए कार्य इस दिशा मे उल्लेखनीय है। राजस्थान के परम्परागत रीति रिवाजों के संरक्षण मे गोयल (1979) व जेलेन्सकी (1966) आदि विद्वानों

ने परम्परागत रीति रिवाज के पहलुओं की व्याख्या में रीति रिवाजों एवं मानव अर्न्तसंबंधो को अधिकाधिक स्पष्ट किया है।

राजस्थान राज्य स्वतंत्र एवं पूर्व सांस्कृतिक इकाई है इसलिए शोध कर्ता ने यहाँ के परम्परागत रीति रिवाजों पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों तथा युक्तिसंगत एवं विवेकपूर्ण परिणामों पर आधारित नियोजन हेतु अध्ययन की योजना प्रस्तुत की है।

- कुरियन (1941) ने नगर परम्परागत रीति रिवाजों के अपने विचार प्रकाशित किए। उनहोने भारतीय परम्परागत रीति रिवाजों एवं संस्कृति पर सुझाव दिये व बसाव स्थान की विशेषताओं, विकास परिस्थितियों, आन्तरिक समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित रखा।
- मिर्डाल (1957) ने भारतीय रीति रिवाज व संस्कृति के प्रवास व्यापार और पूंजी प्रवाह का लेते हुए माना कि गरीब जाति व जनजातियों में उच्च जन्तदर पायी जाती है। अतः इसका प्रवास रीति रिवाजों मे कार्यशील आयु समूह पर होता है।
- उलमान (1958) ने स्पष्ट किया कि क्षेत्र या केन्द्र जो परम्परागत रीति रिवाजों के रूप से संसाधनो से युक्त

होता है वही मानवीय तथ्य जसे तकनीक, पूँजी और नवाचारों का भी स्वभाविक केन्द्रीयकरण होता है।

- क्लार्क (1972) ने अपनी पुस्तक “Population Georaphy” में परम्परागत रीति रिवाजों में जनसंख्या वृद्धि,वितरण,घनत्व के अध्ययन पर व्यापक रूप से प्रभावी अध्ययन किया है।
- डॉ. पी.के बाटल (1976) की पुस्तक "भारत मे परम्परागत रीति रिवाजों की समस्या" प्रकाशित हुयी थी। इस पुस्तक में रीति रिवाजों के संरक्षण का सुझाव दिया गया था।
- आर.सी.चाँदना व एम.एस. सिन्धु ने अपनी पुस्तक " **An Introduction to Caltural Geography**" मे परम्परागत रीति रिवाजों के संरक्षण के सिद्धान्त समस्याऐं व संसाधनो पर जनसंख्या के प्रभाव के बारे में विवरण है।
- सिमन्स (1981) ने "**Ecology of Natural Resources** " मे भारतीय रीति रिवाजों के उपयोग की बात की है। स्वतंत्रता के बाद भारत में परम्परागत रीति रिवाज उत्पन्न करने के लिए निरन्तर विकास की अनेक योजनाऐं जिओटैग के माध्यम से शुरू की गयी।

- सांस्कृतिक विभाग (2001) ने राष्टोय परम्परागत रीति रिवाज विकास परिषद के समक्ष एक दस्तावेज "रीति रिवाज नियोजन चुनौतियाँ एवं व्यूह रचना" प्रस्तुत किया इस दस्तावेज में कहा गया कि परम्परागत रीति रिवाजों के संरक्षण मे ऐसी महत्वपूर्ण समस्या है जो कि हमारे सामाजिक रीति रिवाज का विकास के सभी प्रयासों को निष्फल कर रही है।
- डॉ. ज्ञान चन्द सिन्धु (1994) ने भी लिखा है कि द्रुतगति से बढ़ती हुयी जनसंख्या भारत के परम्परागत रीति रिवाजों के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा है।
- डॉ. तेराव (1995) ने परम्परागत रीति रिवाजों की नीति का उद्देश्य रीति रिवाज के संरक्षण जिओटैग क माध्यम से रीति रिवाज के स्तर को सुधारना है।
- विमला देवी (1999) ने अपने शोध "रीति रिवाज के सतत् विकास के लिए संसाधन मूल्याकंन" में राजस्थान के रीति रिवाजों के पोषणीय विकास हेतु वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय रीति रिवाज पर प्रकाश डाला एवं राजस्थान क परम्परागत रीति रिवाजों का संरक्षण में जिओटैग के माध्यम से क्षेत्रीय विकास के मार्ग में आ रही बाधा का उल्लेख करते हुए उनके निराकरण हेतु

उपयुक्त सुझाव भी दिए। उनके द्वारा रीति रिवाज के क्षेत्रीय विकास में मुख्य भूमिका निभाने वाले बुनियादी आधारभूत सुविधाओ का भी विश्लेषण किया गया।

- प्रो. कलवार (2002) ने अपनी पुस्तक **"Resourcr and Devlopment''** में परम्परागत रीति रिवाज के जिओटैग के माध्यम से क्षेत्रीय विकास के लिए यहाँ उपलब्ध विभिन्न प्रकार की जन जातियों व वन्य जीव अभ्यारण तथा प्राकृतिक धरोहर की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। इन्होंने विभिन्न प्रकार के संसाधनो जैसे वन,जल,भूमि,कृषि,मानवीय आदि के उचित प्रबन्धन एवं विकास हेतु व्यापक सुझाव भी प्रस्तुत किए है।
- मदन कुमार दुबे (2002) ने अपनी पुस्तक "लोक परम्परागत और रीति रिवाज " मे बताया हैं कि बढ़ती जनसंख्या से परम्परागत रीति विाजों मे लगातार कमी हो रही है।
- डॉ. दिनेश मणि (2006) ने " भूगोल और आप" पत्रिका में अपने प्रकाशित लेख" घटती जमीन, कटते वन और बढ़ती आबादी" के द्वारा भारत में परम्परागत रीति रिवाजों के दुष्परिणामो को अंकित किया है।

3. परिकल्पनाः– **(Hypothedid)**

परिकल्पना शब्द परि + कल्पना दो शब्दो से मिलकर बना है। परि का अर्थ चारो और तथा कल्पना का अर्थ चिन्तन है। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से सम्बन्धित समस्त सम्भावित समाधान पर विचार करना है, परिकल्पना किसी भी अनुसन्धान प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है, कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषिकरण के पश्चात उसमे कारणो तथा कार्य कारण सम्बन्ध मे पूर्व चिन्तन कर लिया गया है।

परिकल्पना की परिभाषा को समझने के लिए कुछ विद्वानो की परिभाषाओं को समझना आवश्यक है।

1. करलिंगर – परिकल्पना का दो या दो से अधिक चरो के मध्य सम्बन्धो का कथन मानते है।
2. मोले– "परिकल्पना एक धारधा अथवा तर्क वाक्य है, जिसकी स्थिरता की परीक्षा उसकी अनुरूपता उपयोग अनुभव – जन्य प्रमाण तथा पूर्ण ज्ञान के आधार पर करना है।"
3. मैकगुइन– "परिकल्पना दो या अधिक चरों के कार्य क्षमता सम्बन्धो का परीक्षण योग्य कथन है,"

परिकल्पना मे प्राचीन रीति रिवाजो की कल्पना करके उन पर विचार करके आधुनिक रीति रिवाजों मे परिवर्तन कर अन्तर करके

पहचान सकते है, कि अभी रीति रिवाजो मे कितना परिवर्तन हा रहा है। तथा भविष्य मे प्राचीन रीति रिवाज समाप्त होते जा रहे है। यह सभी पूव अनुभव के आधार पर परम्परागत रीति रिवाजो की परिकल्पना कर सकते है।

4. शोध विधिः– **(Methodologi)**

शोध विधि विशेष के बारे मे बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण एवं यथा सम्भव प्रभूत सामग्री संकलित कर सूक्ष्मतर विश्लेषण विवेचन और नए तथ्यो, नए सिद्धान्तो के उद्घाटन की प्रक्रिया अथवा कार्य शोध कहलाता है।

अनुसन्धान, गवेषणा, खोज, अन्वेषणा, मीमांसा, अनुशीलन,परिशीलन, आलाचना, रिसर्च आदि।

अंग्रेजी में जिस लोग डिस्कवरी ऑफ फैक्ट्स कहते है, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सन 1969 मे स्थूल अर्थो मे उसी नवीन और विस्मृत तत्त्वों के अनुसन्धान को शोध कहते है।

शोध विधि दो प्रकार की होती है।

(1) प्रत्यक्ष विधि (2) अप्रत्यक्ष

1. उदाहरण के रूप मे राजस्थान के परम्परागत रीति रिवाज संस्कृति प्रत्यक्ष अध्ययन करना है, तो प्रत्यक्ष विधि के अन्तर्गत राजस्थान के रीति रिवाजो व परम्परागत संस्कृति

से संबंधित जिओटैग के आधार पर कुछ चयन किया जाना चाहिए कि प्राचीन रोति रिवाजो को पुनः विकसित करना चाहिए।

2. अप्रत्यक्ष विधिः— इसके अंतर्गत उन रोति रिवाजो का चयन किया जाना चाहिए जो प्रत्यक्ष रूप से जिओटैग के आधार पर परम्परागत रोति रिवाज संस्कृति की महत्वपूर्ण जानकारी है।

5. उद्देश्यः–

1. जिओटैग सामाजिक समीपता मे सहायक है।
2. राजस्थान के ऐतिहासिक धराहरो का संरक्षण जिओटैग के माध्यम से किया जायेगा।
3. जिओटैग के माध्यम से राजस्थान के वन्यजोवो का संरक्षण किया जायेगा।
4. जिओटैग के माध्यम से किसी स्थान व जाति विशेष की संस्कृति तथा परम्पराओं को आसानी से समझा जायेगा।
5. राजस्थान के दुर्गो का संरक्षण जिआटैग के माध्यम से किया जायेगा।
6. प्रत्यक्ष व्यक्ति जिओटैग के माध्यम से अपने रोति रिवाजो व रपम्पराओ से अवगत हो जायेगा।
7. विज्ञान की प्रकृति ने सांस्कृतिक मूल्यो को प्रभावित किया है।

6. आँकडो का संग्रहण :–

भौगोलिक शोध या अनुसंधान मे प्रयुक्त आंकडो के प्रकार

किसी भी परोक्षण में सांख्यकीय विधियों के प्रयोग हेतु आंकडे संग्रह किए जाते है। सांख्यकीय आंकडो के अभाव मे सांख्यकीय विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

अध्ययन या अनुसंधान में अनेक स्रेतो से आंकडे एकत्र किए जाते है। आधार भूत आंकडे विभिन्न दस्तावेजो अथवा प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त किए जाते है। अन्य विषयों के विपरीत भौगोलिक अध्ययन में अनेक स्रोतो के साथ साथ क्षेत्रीय अवलोकन से भी आंकडे एकत्र किए जात है।

सांख्यकीय विश्लेषण हेतु प्रयुक्त आंकडे दो प्रकार के होते है, प्राथमिक आंकडे (प्राइमरी डाटा) और द्वितीय आंकडे (सेकेंडरी डाटा)

1. प्राइमरी डाटा या प्राथमिक आंकडे पहली बार अन्वेषको अथवा गणनाकारों द्वारा संग्रह किए जाते है, प्रत्यक्ष रूप से पर्यवेक्षण द्वारा एकत्रित आंकडे जो अपने मौलिक रूप में होते है, जैसे जनसंख्या, उत्पादन की मात्रा आदि क्षेत्र अन्वेषण द्वारा अधिकांशतः प्राथमिक आंकडे एकत्र किए जाते हैं।

2. सेकेंडरी डाटा या द्वितीय आंकडे दूसरों द्वारा संग्रहित होते है, और सामान्यतः पत्र पत्रिकाओ और अनुसन्धान प्रकाशनो में उपलब्ध होते है, प्राथमिक आंकडे से गणना द्वारा द्वितीयक आंकडे प्राप्त किए जाते है।

आंकडों के संग्रह की विधियाँ :

सांख्यकीय विश्लेषण हेतु प्रयुक्त वांछित आंकडो के संग्रह की दो विधियाँ है सेंसस या गणना विधि और सैंपल या प्रतिदर्श विधि।

राजस्थान की जनसंख्या अनुमानित जनसंख्या 2021

2020 मे राजस्थान की अनुमानित जनसंख्या 79,502477

2021 मे पुरूषो की अनुमानित जनसंख्या 41,235725

2021 मे महिलाओ की अनुमानित जनसंख्या 38,266,753

2011 की जनसंख्या के अनुसार जनसंख्या

2011 मे राजस्थान की कुल आबादी 68,548,437

7. अध्याय योजना :–

(1) परिचय

(2) भोगोलिक अध्ययन

(3) परम्पराओ एवं रोति रिवाजो का अध्ययन

(4) जनसख्या

(5) भारतीय संस्कृति का अध्ययन

(6) सुझाव एवं निष्कर्ष